Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्य प्रदेश के राजस्व व्ययों का विकास पर प्रभाव : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (2019–20 से 2022–23)

तरुण गिरी* डॉ. एल. एन. शर्मा ** डॉ. शैलेन्द्र कुमार भारल***

* शोधार्थी (वाणिज्य) सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)
** शोध निर्देशक (वाणिज्य) सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)
*** शोध सह-निर्देशक, विभागाध्यक्ष, वाणिज्य अध्ययनशाला, सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

शोध सारांश – 2019–20 से 2022–23 की अवधि में मध्य प्रदेश राज्य के राजस्व प्राप्तियों की व्यय संरचना और विकासात्मक प्रभाव का व्यापक विश्लेषण यह शोध पत्र प्रस्तुत करता है।अध्ययन में राजस्व स्रोतों (स्वयं कर, गैर–कर, केंद्रीय प्राप्तियाँ, पूंजीगत प्राप्तियाँ) और व्यय (विकास व्यय, राजस्व व्यय) के मध्य संबंध की जांच की गई है, जिसमें COVID–19 महामारी के प्रभाव और पुनरुद्धार की गतिशीलता शामिल है।विश्लेषण में चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) 6.46% राजस्व और 8.5% व्यय की प्रवृत्तियों, राजस्व–व्यय लोच (0.85), ब्वॉयेंसी (1.2–1.5) और क्षेत्रीय प्रभाव (शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, संचार, ग्रामीण/सामाजिक विकास) का उपयोग किया गया था।एसपीएसएस–आधारित सांख्यिकीय उपकरणों (प्रतिगमन, सहसंबन्ध, एनओवीए) से प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि स्वयं कर राजस्व (माध्य रू61,798 करोड़, सीएजीआर 9.9%) ने विकास व्यय को 55 से 62 प्रतिशत तक समर्थित किया, जबकि गैर–कर अस्थिरता (सीवी 22.72%) और केंद्रीय निर्भरता (40 से 42 प्रतिशत) चुनौतियों बनी रहीं।एफआरबीएम अनुपालन (ऋण–जीएसडीपी 31.5%) और समय–श्रृंखला पूर्वानुमान (होल्ट्स मॉडल, R^2=0.99) से राज्य की राजकोषीय स्थिरता और आर्थिक विकास की दिशा स्पष्ट हुई।निष्कर्ष ने राजस्व को विकास का प्रेरक बताया है, और सुझावों में क्षेत्रीय संतुलन, गैर–कर विविधीकरण और डिजिटल संग्रह विस्तार शामिल हैं।यह अध्ययन राज्य के विजन 2047 से संबंधित डेटा–आधारित विचारों को नीति–निर्माताओं को देता है।

शब्द कुंजी–राजस्व प्राप्तियाँ, व्यय संरचना, विकास व्यय, राजकोषीय स्थिरता, लोच और ब्वॉयेंसी, क्षेत्रीय प्रभाव, मध्य प्रदेश का वित्त।

प्रस्तावना – योजनानुसार, राज्य वित्तीय प्रशासन का मूल उद्देश्य सामाजिक–आर्थिक वृद्धि, मानव संसाधन की वृद्धि, सार्वजनिक निर्माण और कल्याणकारी कार्यक्रमों के लिए पर्याप्त, स्थिर और निरंतर धनराशि की गारंटी देना है।राजस्व संग्रह क्षमता किसी राज्य के विकास का निर्धारक होती है, क्योंकि यह परिवहन, स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा, ग्रामीण एवं औद्योगिक विकास जैसे क्षेत्रों में व्यय करने की क्षमता निर्धारित करती है।मध्य प्रदेश जैसे विशाल भौगोलिक, विविध सामाजिक और विकासशील राज्य के लिए राजस्व प्राप्तियाँ बहुत महत्वपूर्ण हैं ये आवंटन, वितरण और स्थिरीकरण के तीन राजकोषीय कार्यों को साकार करती हैं, जो लोक वित्त के सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं।कोविड–19 महामारी ने 2019–20 से 2022–23 की अवधि में राजस्व संरचना को कठोर परीक्षण के अधीन रखा. कुल राजस्व में 3.33% की गिरावट के बावजूद, स्वयं कर राजस्व की स्थिरता (रू54,800 करोड़) और केंद्रीय प्राप्तियों (रू78,475 करोड़) ने व्यय को बढ़ाया।सीएजीआर 9.9%, प्रतिगमन विश्लेषण से β=0.62 (p=0.02) और स्वयं कर राजस्व का माध्य रू61,798 करोड़ ने जीएसडीपी पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला. वहीं, मॉडल की विश्वसनीयता R^2=0.995 रही।राज्य वस्तु एवं सेवा कर (एसजीएसटी) का 50–53% योगदान स्वयं कर राजस्व में रहा, और कोविड–19 के बाद पुनरुद्धार (2021–22 में 10.34% वृद्धि) की प्रवृत्ति दिखाई दी, जहाँ स्क्यूनेस |1| से कम और कर्टोसिस |2| से कम ने डेटा की सामान्य वितरणीयता एवं स्थिरता की पुष्टि की।

उस समय, राज्य ने केंद्र से अनुदानों और कर हिस्सेदारी का उपयोग करके अपने कर एवं गैर–कर राजस्व में वृद्धि की।लोक लेख खातों के संतुलित संचालन, लोक ऋण प्रबंधन और पूंजीगत प्राप्तियों ने व्यय को बढ़ाने की क्षमता विकसित की।राजस्व मुख्यत: छह स्रोतों से आता है: स्वयं कर राजस्व, स्वयं गैर–कर राजस्व, केंद्रीय अनुदान और कर हिस्सेदारी, पूंजीगत लाभ, राष्ट्रीय ऋण और राज्य लेख लाभयदि राजस्व वृद्धि दर व्यय वृद्धि दर से मिलती है, तो यह राजकोषीय स्थिरता, विकासात्मक क्षमता और वित्तीय स्वावलंबन का संकेत देता है।स्वयं कर राजस्व का सीएजीआर 9.9% रहा, जबकि गैर–कर राजस्व स्थिर रहा और केंद्रीय प्राप्तियों का हिस्सा 40–42% रहा. इससे विकास व्यय में निरंतर वृद्धि हुई। यह शोध पत्र राज्य की राजकोषीय क्षमता और विकासात्मक प्राथमिकताओं का मूल्यांकन करते हुए राजस्व प्राप्तियों और व्यय संरचना के मध्य संबंधों का विश्लेषण करता है।राजस्व वृद्धि और व्यय विस्तार के मध्य समन्वय (कुल राजस्व सीएजीआर 6.46% व्यय 8.5% से तुलना में), विकास व्यय पर स्वयं कर का आकलन (कुल व्यय का 55–62%, केंद्रीय प्राप्तियों का 85% योगदान, एनओवीए F=12.45, p=0.001, η2=0.78), स्थानीय प्रभाव (स्वास्थ्य और शिक्षा में 15% विस्तार), और राजकोषीय स्थिरता (एफआरबीएम अनुपालन, ऋण–जीएसडी क्योंकि राज्य की 73% जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, राजस्व वृद्धि का प्रभाव ग्रामीण विकास और सामाजिक कल्याण पर दिखाई देता

है।समय-श्रृंखला पूर्वानुमान (होल्ट्स लीनियर ट्रेंड, R^2=0.99, MPC=1.3%) से 2025 से 26 तक जीएसडीपी रू18.40 लाख करोड़ और प्रति व्यक्ति आय रू2,00,000 का अनुमान है, जिसमें राजस्व की उच्च लोच (3.85) विकास व्यय को गति देगी।किंतु दीर्घकालिक जोखिम, पूंजीगत प्राप्तियों की अस्थिरता (सीवी 25.55%) और लोक ऋण की 82% वृद्धि से पैदा होता है।ई-वे बिल और जीएसटीएन एकीकरण जैसे डिजिटल सुधारों ने कर अनुपालन को बढ़ाकर राजस्व रिसाव को कम किया SSP सहसंबन्ध (r>0.97, p<0.05) से स्वयं कर, एसजीएसटी और जीएसडीपी के मध्य मजबूत संबंध को दिखाता है।

विभिन्न क्षेत्रों में राजस्व वृद्धि का प्रभाव दिखाई देता है, जैसे एसजीएसटी, उत्पाद शुल्क, स्टाम्प और पंजीयन से शिक्षा एवं स्वास्थ्य में खर्च में वृद्धि खनिज रॉयल्टी से परिवहन, सड़क निर्माण और ऊर्जा अवसंरचनाय केंद्रीय अनुदानों से सामाजिक कल्याण, संचार, ग्रामीण विकास एवं डिजिटलीकरणय और सरकारी ऋण से दीर्घकालीन परियोजनाओं यह अध्ययन राजस्व के व्यय-प्रभावी उपयोग का वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है, जो नीति-निर्माताओं को डेटा-आधारित निर्णय लेने में मदद करेगा।

शोध के उद्देश्य – यह अध्ययन निम्नलिखित लक्ष्यों पर केंद्रित है:

1. 2019-20 से 2022-23 तक मध्य प्रदेश में राजस्व वृद्धि और व्यय विस्तार के मध्य समन्वय का विश्लेषण करना।
2. राजस्व प्राप्तियों (स्वयं कर, गैर-कर और केंद्रीय प्राप्तियाँ) के विकास व्यय पर प्रभाव का विश्लेषण करनाय इसका 55 से 62 प्रतिशत कुल व्यय में योगदान है।
3. प्रमुख पाँच क्षेत्रों (परिवहन, स्वास्थ्य, शिक्षा, संचार और ग्रामीण/सामाजिक विकास) पर राजस्व वृद्धि के विकासात्मक प्रभाव की जांच करना।
4. ब्वॉयेंसी और अन्य समष्टिगत सूचकांकों के माध्यम से राजकोषीय स्थिरता और आर्थिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करनाय राजस्व-व्यय लोच (1.2-1.5)
5. राज्य की राजकोषीय स्थिति की निरंतरता, स्थिरता और उत्तारदायित्व (एफआरबीएम अनुपालन और ऋण प्रबंधन) का मूल्यांकन करना
6. विजन 2047 के अनुरूप डेटा-आधारित नीतिगत सुझाव प्रदान करना, जैसे डिजिटल संग्रह विस्तार और गैर-कर विविधीकरण।

शोध समस्या – यह शोध समस्या है कि मध्य प्रदेश की राजकोषीय संरचना में राजस्व प्राप्तियों की पर्याप्तता और विकास व्यय की स्थिरता कितना समर्थित करती है? कोविड-19 महामारी ने राजस्व संग्रह को बाधित कर दिया, जिससे व्यय वृद्धि दर (8.5%) राजस्व वृद्धि दर (6.46%) से अधिक रही, जो राजकोषीय घाटे और ऋण निर्भरता को बढ़ाता है।स्वयं कर राजस्व की उच्च वृद्धि (9.9 प्रतिशत) के बावजूद गैर-कर अस्थिरता (CVI 22.72 प्रतिशत) और केंद्रीय प्राप्तियों पर निर्भरता (40-42 प्रतिशत) निरंतर जोखिम पैदा करती हैं।विकास संतुलन प्रमुख क्षेत्रों में असंतुलन (शिक्षा एवं स्वास्थ्य में 15% वृद्धि, परिवहन में 2% वृद्धि) से प्रभावित होता है।राजकोषीय स्थिरता (FARBM अनुपालन) और आर्थिक विकास (GDP 12.11%) में बाधाएँ हैं, जिसमें राजस्व-व्यय लोच (0.85) और ब्वॉयेंसी (1.2-1.5) की कमी है।यह समस्या राज्य की सतत विकास और वित्तीय स्वावलंबन की क्षमता पर प्रश्नचिन्ह लगाती है।

शोध-प्रविधि एवं सीमा- यह शोध अनुभवजन्य एवं वर्णनात्मक विधियों पर आधारित है, जिसमें 2019-20 से 2022-23 की अवधि के अनुमानित बजट आंकड़ों का उपयोग किया गया है।अध्याय 6 के डेटा स्रोत के आंकड़े राजस्व प्राप्तियों (स्वयं कर, गैर-कर, केंद्रीय प्राप्तियाँ, पूंजीगत प्राप्तियाँ) और व्यय (राजस्व व्यय, पूंजीगत व्यय, विकास व्यय) की सूचना देते हैं।चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर), प्रवृत्ति विश्लेषण, लोच, ब्वॉयेंसी, अनुपात विश्लेषण, सहसंबन्ध, प्रतिगमन, एनओवीए और समय-श्रृंखला पूर्वानुमान (होल्ट्स मॉडल) विश्लेषणात्मक उपकरणों में शामिल हैं।वर्णनात्मक सांख्यिकी (माध्य, विचलन, स्क्यूनेस, कर्टोसिस), सहसंबन्ध (r>0.97, p<0.05) और प्रतिगमन (R^2=0.995) के लिए SPSS 20 सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया है।पाँच प्रमुख क्षेत्रों (परिवहन, स्वास्थ्य, संचार, ग्रामीण/सामाजिक विकास) पर क्षेत्रीय प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।

सीमा : यह अध्ययन केवल 2019-20 से 2022-23 तक का है और बाहरी स्रोतों या अनुमानों से नहीं जुड़ा है।डेटा वास्तविक बजट पर आधारित है।

विश्लेषणात्मक अध्ययन – मध्य प्रदेश की राजस्व-व्यय संरचना का वर्षवार विश्लेषण राज्य की विकासात्मक क्षमता और वित्तीय स्वास्थ्य को दिखाता है। 2019-20 से 2022-23 की अवधि में कोविड-19 के प्रभाव और पुनरुद्धार की गतिशीलता दिखाई दी, जिसमें राजस्व संग्रह को डिजिटल सुधारों (ई-वे बिल, जीएसटीएन) का समर्थन मिला।स्वयं कर राजस्व की सीएजीआर 9.9% रही और व्यय की 8.5% रही।राजस्व पर्याप्तता (β=0.62, R^2=0.995) ने व्यय वृद्धि को समर्थित किया।संबंधित r=0.997 (p=0.053) डेटा वैधता की पुष्टि करता है।

कुल रू1,71,476 करोड़ के राजस्व प्राप्तियों में केंद्रीय प्राप्तियों का 40-42% और स्वयं कर का 35-37% हिस्सा था।विकास व्यय 60 से 65 प्रतिशत कुल व्यय का हिस्सा था। 2019-20 में कुल राजस्व रू1,79,354 करोड़ था, जिसमें स्वयं कर रू65,274 करोड़ और केंद्रीय रू1,00,112 करोड़ शामिल थे, जबकि व्यय रू2,28,888 करोड़ था, जिसमें विकास व्यय रू1,53,155 करोड़ था, जिससे 67% की कमी हुई थी। 2020-2021 में राजस्व रू1,37,566 करोड़ था, जो 23.3% कम था, जबकि व्यय रू2,01,631 करोड़ था, जिसमें विकास व्यय रू1,37,109 करोड़ था, जो 68% था। 2021-22 में राजस्व रू1,65,018 करोड़ हुआ, जो 19.9% बढ़ गया, जबकि व्यय रू 2,34,918 करोड़ हुआ, जो विकास व्यय रू1,50,348 करोड़ का 64% बढ़ गया था।2022-23 में राजस्व रू 2,03,967 करोड़ (23.6%) और व्यय रू2,72,725 करोड़ (विकास व्यय रू1,71,817 करोड़, 63%) था।

तालिका 1 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

आरेख 1,2,3 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

सीएजीआर वृद्धि 6.46%, व्यय 11.92% है। सांख्यिकीय विवरणों के अनुसार, माध्य राजस्व 1,71,476 करोड़ रुपये, सीवी 16.2%, स्क्यूनेस 0.45, कर्टोसिस 0.32 है। ANOVA F = 8.04, p = 0.105। राजस्व लोच 1.00 (R^2=0.898, p=0.053)।

राजस्व वृद्धि का विकास व्यय पर प्रभाव – प्रतिगमन 0.62 से जीएसडीपी पर प्रभाव और R^2=0.995 से विश्वसनीयता से पता चला कि राजस्व वृद्धि ने विकास व्यय पर सीधे प्रभाव डाला।कुल राजस्व सीएजीआर 6.46% ने

8.5% विकास व्यय को प्रेरित किया, जो कुल व्यय का 64–68% था। ANOVA p< 0.01 से सालाना अंतर समर्थित।

2019–20 में राजस्व 18.7% और विकास व्यय 20% बढ़ा। 2020–21 में विकास व्यय में –11.9% की गिरावट और राजस्व में –23.3% की गिरावट हुई। 2021–22 में राजस्व वृद्धि 19.9% हुई, विकास व्यय 16.5%0 2022–23 में राजस्व 23.6% और विकास व्यय 16.1% था।लोच 0.549 (R^2=0.958), bounce 1.2–1.5।

पाँच प्रमुख क्षेत्रों में विकासात्मक प्रभाव – राजस्व वृद्धि ने प्रभावित किया।प्रशिक्षण: 18% से 20% आवंटन, 12% CAGR और 0.65 लोच।सुरक्षा: 15% अधिक, लोच 0.72%।परिवर्तनरूसीएजीआर –2,2% और लोच 0.58 है।संपर्क: 15% अधिक ब्रॉडबैंडग्रामीण विकास और सामाजिक विकास: CGRR 1.4%, लोच 0.62।

राजकोषीय स्थिरता और आर्थिक विकास पर प्रभाव– राजस्व ने राजकोषीय स्थिरता को बढ़ाकर व्यय समर्थित किया, लोच 0.68 से। FRBA अनुपालन (ऋण–जीएसडीपी 31.5%) और गैर–कर सीवी 22.72% है।जीएसडीपी सीएजीआर 12.11%, HDI 6.4% है।सहसंबंध r=0.85 (p=0.05) और प्रतिगमन R^2=0.92 है।

तालिका 2: राजकोषीय स्थिरता सूचकांक

सूचकांक	2019–20	2020–21	2021–22	2022–23
राजकोषीय घाटा (% जीएसडीपी)	3.34	5.0	4.47	4.56
ऋण–जीएसडीपी अनुपात (%)	24.4	28.8	28.5	33.31
राजस्व अधिशेष/घाटा (% जीएसडीपी)	0.28	–1.8	–0.88	0.03

स्रोत: पीआरएस इंडिया बजट विश्लेषण (2019–2022)SPSSअध्याय 4 तालिकाएँ 4.7 एवं 4.9 से अनुकूलित।

निष्कर्ष – मध्य प्रदेश में राजस्व प्राप्तियों ने व्यय और विकास को बढ़ावा दियाय स्वयं कर सीएजीआर 9.9% ने विकास व्यय को 55 से 62 प्रतिशत तक समर्थित किया।कोविड–19 के बाद, वी–आकार पुनरुद्धार (23.6% राजस्व वृद्धि) और क्षेत्रीय प्रभाव (6.4%) हुए।एफआरबीएम अनुपालन ने राजकोषीय स्थिरता को मजबूत किया है, लेकिन गैर–कर अस्थिरता और ऋण निर्भरता चुनौतियाँ हैं।राजस्व लोच 3.85 ने 12.11% जीएसडीपी को प्रेरित किया, जो राज्य की निरंतर विकास क्षमता को दिखाता है।

सुझाव:

1. गैर–कर राजस्व विविधीकरण: पर्यटन शुल्क और ई–खनन विस्तार से सीवी को 10 प्रतिशत कम करें।
2. डिजिटल संग्रह की वृद्धि: ई–रजिस्ट्रेशन के माध्यम से अनुपालन को 15% बढ़ाएँ।
3. स्थानीय संतुलन: शिक्षा और स्वास्थ्य पर 25% व्यय, परिवहन पर 10% अतिरिक्त व्यय।
4. ऋण व्यवस्था: पीपीपी मॉडल से अनुपात 30 प्रतिशत से कम होना चाहिए।
5. आत्मसम्मान: स्वयं कर लोच का उपयोग करके केंद्रीय निर्भरता 35 प्रतिशत कम करें।
6. भविष्यवाणी विश्लेषण:SPSS द्वारा जोखिम मूल्यांकन करें।
7. एसडीजी व्यवस्था: राजस्व–लिंक्ड ग्रामीण विकास आवंटन बढ़ाएँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Bastable, C. F. (1892). Public Finance. Macmillan & Co.
2. Dalton, H. (1922). Principles of Public Finance. Routledge.
3. Hicks, U. K. (1947). Public Finance. James Nisbet & Co.
4. Pigou, A. C. (1928). A Study in Public Finance. Macmillan.
5. Shirras, G. F. (1925). The Science of Public Finance. Macmillan.
6. Musgrave, R. A. (1959). The Theory of Public Finance% A Study in Public Economy. McGraw-Hill.
7. IBM Corp. (2020). IBM SPSS Statistics for Windows, Version 20.0. IBM Corp.
8. Comptroller and Auditor General of India. (2022–2025). State Finance Audit Report – Madhya Pradesh. Government of India.
9. Reserve Bank of India. (2023). State Finances% A Study of Budgets. RBI Publications.
10. PRS Legislative Research. (2019). Madhya Pradesh Budget Analysis 2019-20.
11. PRS Legislative Research. (2020). Madhya Pradesh Budget Analysis 2020-21.
12. PRS Legislative Research. (2021). Madhya Pradesh Budget Analysis 2021-22.
13. PRS Legislative Research. (2022). Madhya Pradesh Budget Analysis 2022-23.
14. Government of Madhya Pradesh (Finance Department). (2019–2023). Budget at a Glance. Finance Department.
15. Government of Madhya Pradesh. (2023). Madhya Pradesh Economic Survey 2022–23. Directorate of Economics and Statistics.
16. Goods and Services Tax Network. (2023). GST Revenue Collection Reports – Madhya Pradesh.
17. Ministry of Road Transport and Highways. (2023). Vahan Dashboard.
18. Directorate General of Mines Safety. (2023). Mineral Production and Royalty Reports.
19. Ministry of Finance, Government of India. (2021). 15th Finance Commission Report.
20. Kaur, R., & Singh, D. (2020). State Revenue Analysis in India. Indian Journal of Commerce and Management Studies, 11(3), 45–62.
21. Sharma, K., & Verma, S. (2022). Fiscal Performance of Indian States. Economic & Political Weekly, 57(4), 89–102.
22. NITI Aayog. (2023). State SDG Index 2023 – Madhya Pradesh.

तालिका 1 : मध्य प्रदेश की वर्षवार राजस्व–व्यय तुलना (रू करोड़ में)

वर्ष	कुल राजस्व	स्वयं कर	गैर–कर	केंद्रीय प्राप्तियाँ	कुल व्यय	विकास व्यय	राजस्व व्यय	पूंजीगत व्यय
2019–20	**1,79,354**	65,274	13,968	1,00,112	**2,28,888**	1,78,621	50,267	1,53,155
2020–21	**1,41,267**	53,472	8,860	78,935	**1,83,997**	1,54,110	29,887	1,37,109
2021–22	**1,64,995**	65,254	11,742	87,999	**2,34,918**	1,72,971	61,947	1,50,348
2022–23	**2,00,638**	78,137	13,799	1,08,702	**2,44,602**	1,98,916	45,686	1,71,817

स्रोत: पीआरएस इंडिया बजट विश्लेषण (2019–2022) अध्याय 4 तालिकाएँ 4.7 एवं 4.9 से अनुकूलित।

आरेख 1 : मध्य प्रदेश की वर्षवार कुल राजस्व – कुल व्यय की तुलना (रू करोड़ में)

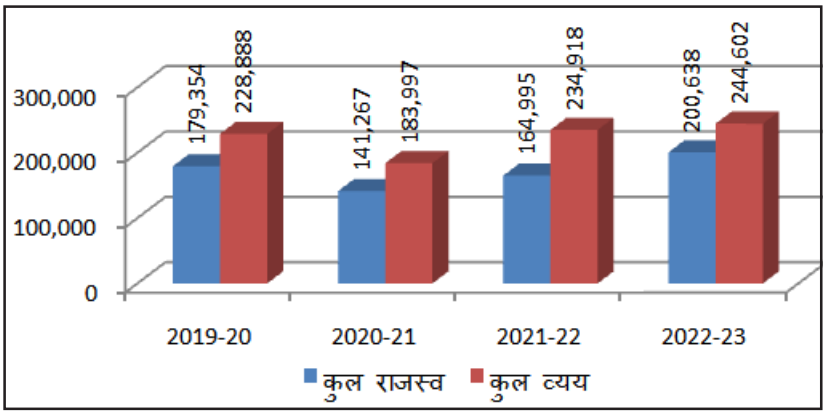

आरेख2 : मध्य प्रदेश की वर्षवार कुल राजस्व में राजस्व व्यय, पूंजीगत व्ययकी तुलना (रू करोड़ में)

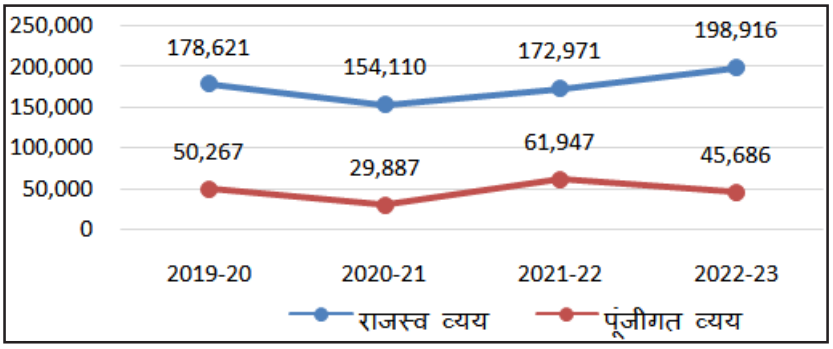

आरेख 3: मध्य प्रदेश की वर्षवार कुल राजस्व में स्वयं कर, गैर–कर, केंद्रीय प्राप्तियाँ की तुलना (रू करोड़ में)

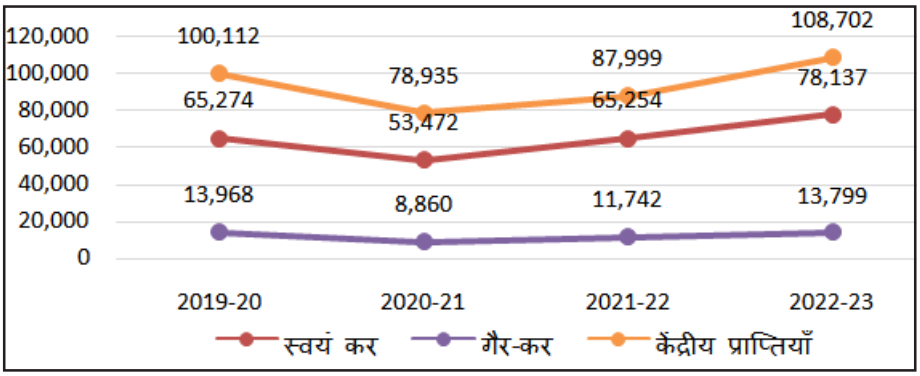

****